Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
Paper IV Western Logic (BA Part II H.)

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 6, Sept.
September 7, 2020

Class BA Part II H

विधि और तात्पर्य के अनुसार तर्कवाक्यों का विभाजन

तर्कशास्त्र के विद्वानों ने विभिन्न दृष्टिकोण से तर्क वाक्यों के भिन्न-भिन्न भेद बताए हैं। तर्क वाक्यों का विभाजन रचना (Construction) की दृष्टि से, संबंध (Relation)की दृष्टि से, गुण (Quality)की दृष्टि से और परिमाण (Quantity) की दृष्टि से किया गया है। इनके अतिरिक्त तर्कवाक्यों को विधि (Mobility) की दृष्टि से और तात्पर्य (Import) की दृष्टि से भी विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया है। यहां पर तर्कवाक्यों के विभिन्न प्रकारों का संक्षेप में वर्णन किया जाएगा। तर्कवाक्य विचार की इकाई है। इसमें तीन प होते हैं :- उद्देश्य, विधेय और संयोजक।

विधि के अनुसार तर्कवाक्यों का विभाजन

विधि का तात्पर्य तर्कवाक्य की संभावना या निश्चयात्मकता से है। विधि के अनुसार तर्कवाक्यों का विभाजन उद्देश्य के बारे में जो विधेय में निश्चयात्मकता पाई जाती है उस पर निर्भर करता है। इस प्रकार विधि संभावना की मात्रा है। विधि की दृष्टि से तर्कवाक्यों को निम्नलिखित प्रकारों में बांटा जा सकता है:- **अनिवार्य तर्कवाक्य, प्रतिज्ञात तर्कवाक्य और संदिग्ध तर्कवाक्य।**

(1) अनिवार्य तर्कवाक्य (Necessary Proposition) :-

इस तर्कवाक्य को आवश्यक या निश्चित तर्कवाक्य भी कहते हैं। इसमें जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है विधेय उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहता है वह सभी देश और काल में सत्य होता है। दूसरे शब्दों में, अनिवार्य तर्कवाक्य के विरुद्ध तर्कवाक्य सदैव असत्य होता है। इस प्रकार के तर्कवाक्यों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं- 'जो जन्म लेता है उसका मरना अनिवार्य है।' 'त्रिभुज के तीनों कोण दो समकोण के बराबर होते हैं।' 'वर्ग की चारों भुजाएं समान लंबाई वाली होती है' इत्यादि। यहाँ पर यह ध्यान रखना आवश्यक है कि अनिवार्य तर्कवाक्य में विधेय उद्देश्य के विषय में कोई ऐसी बात कहता है, जो उसकी प्रकृति का अनिवार्य अंग होती है। अर्थात् जिसकी अनुपस्थिति में उस वस्तु का होना संभव ही नहीं है। अतः अनिवार्य तर्कवाक्य में विधेय उद्देश्य के मूल धर्म को बतलाता है।

(2) प्रतिज्ञात तर्कवाक्य (Assertory Proposition) :-

तर्कवाक्य के इस वर्ग में वे तर्कवाक्य आते हैं जो न तो निश्चय प्रकट करते हैं और न संदेह, किंतु हमारे अनुभव की सीमा में सत्य होते हैं। ना तो यह अनिवार्य तक बाकी के समान देश-कालातीत तथ्य की स्थापना करते हैं और ना संदिग्ध तर्कवाक्य के समान संदेह-युक्त बात कहते हैं। इनमें उद्देश्य के विषय में विधेय ऐसी बात की स्थापना करता है जो अनुभव से सिद्ध होती है; जैसे 'सब कौवे काले होते हैं' 'कोयल का स्वर मीठा होता है' 'पानी

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

से प्यास बुझती है' इत्यादि। चूंकि प्रतिज्ञात तर्कवाक्य अनिवार्य नहीं होता है, इसलिए कुछ परिस्थितियों में उनके विरुद्ध तर्कवाक्य के सत्य होने की संभावना होती है।

(3) संदिग्ध तर्कवाक्य (Problematic Proposition) :-

संदिग्ध तर्कवाक्य वह है जिसमें उद्देश्य और विधेय में मात्र संभावना का संबंध होता है। दूसरे शब्दों में, उद्देश्य के बारे में विधेय जिस तथ्य का प्रतिपादन करता है वह कुछ परिस्थितियों में सत्य और कुछ अन्य परिस्थितियों में असत्य सिद्ध होता है; जैसे 'संभव है आज वर्षा हो जाए' 'कदाचित वह कल आएगा' 'मुझे कल तक रुपया मिलने की संभावना है' इत्यादि।

तात्पर्य की दृष्टि से तर्कवाक्य का विभाजन

तर्कशास्त्रियों ने तात्पर्य की दृष्टि से तर्कवाक्यों को निम्नलिखित दो भागों में विभाजित किया गया है:- **शाब्दिक तर्कवाक्य और अशाब्दिक तर्कवाक्य।**

(1) शाब्दिक तर्कवाक्य (Verbal Proposition) :-

शाब्दिक तर्कवाक्य विश्लेषणात्मक होता है। अर्थात् इसमें विधेय उद्देश्य के स्वभाव या स्वभाव के कुसी अंश मात्र का कथन करता है। जैसे 'सब मनुष्य मननशील है' अथवा 'मनुष्य विचारवान प्राणी है' इत्यादि। इस प्रकार के तर्कवाक्य अनिवार्य रूप से सत्य होते हैं, क्योंकि इसमें विधेय उद्देश्य के बारे में कोई नई बात नहीं कहता बल्कि उद्देश्य का विश्लेषण करके उसके स्वभाव को प्रकट करता है। इसलिए यह तत्व सूचक तर्कवाक्य (Essential प्रोपोसिटीओं) भी कहलाते हैं। इनको स्फोटक तर्कवाक्य भी कहते हैं, क्योंकि इनमें विधेय उद्देश्य के स्वाब को स्पष्ट अथवा प्रकट करता है।

(2) यथार्थ तर्कवाक्य (Real Proposition) :-

यह संश्लेषणात्मक तर्कवाक्य है। अर्थात् इसमें विधेय उद्देश्य के विषय में किसी ऐसे कथन का प्रतिपादन करता है जो उद्देश्य के विश्लेषण से नहीं निकाला जा सकता। उदाहरण के लिए 'गाय दूध देती है' 'कुत्ता पालतू जानवर है' 'मनुष्य हंसने वाला प्राणी है' इत्यादि। इन तर्कवाक्यों में विधेय का कथन विश्लेषण के द्वारा उद्देश्य से नहीं निकाला जा सकता। गाय के विश्लेषण से दूध देने का गुण नहीं निकलता। हंसना मनुष्य का अनिवार्य गुण नहीं है और पालतू होना कुत्ते के लिए आवश्यक नहीं है। इस प्रकार यथार्थ तर्कवाक्य में विधेय उद्देश्य के बारे में किसी नई बात की स्थापना करता है जो कि उसकी गुणवत्ता में सम्मिलित नहीं हो सकती। इसलिए इसको ज्ञापक तर्कवाक्य (Ampliative Propositipn) भी कहते हैं। संश्लेषण पर आधारित होने के कारण यह संश्लेषणात्मक तर्कवाक्य (Synthetic Proposition) भी

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

कहलाता है। चूंकि इनमें उद्देश्य के विषय में किसी ऐसे गुण का कथन होता है जिसका उनमें होना अनिवार्य नहीं है इसलिए यह आकस्मिक तर्कवाक्य भी कहलाता है।

तर्कवाक्यों के सम्पूर्ण विभाजन को निम्नलिखित रूप में रखा जा सकता है:-

1. रचना की दृष्टि से तर्कवाक्य :- सरल तर्कवाक्य और मिश्रित तर्कवाक्य
   मिश्रित तर्कवाक्यों को निम्नलिखित दो उपवर्गों में बांटा गया है :-
   a. संनिकृष्ट मिश्रित तर्कवाक्य b. विप्रकृष्ट मिश्रित तर्कवाक्य
2. संबंध की दृष्टि से तर्कवाक्य :- निरपेक्ष तर्कवाक्य और सापेक्ष तर्कवाक्य
   सापेक्ष तर्क वाक्य को निम्नलिखित दो वर्गों में विभाजित किया जाता है:-
   a. हेतुफलाश्रित सापेक्ष तर्कवाक्य b. वैकल्पिक सापेक्ष तर्कवाक्य
3. गुण की दृष्टि से तर्कवाक्य :- भावनात्मक तर्कवाक्य और निषेधात्मक तर्कवाक्य
4. परिमाण की दृष्टि तर्कवाक्य:- सामान्य तर्कवाक्य और दूसरा विशेष तर्कवाक्य
5. विधि के अनुसार तर्कवाक्य :- अनिवार्य तर्कवाक्य, प्रतिज्ञात तर्कवाक्य और संदिग्ध तर्कवाक्य।
6. तात्पर्य की दृष्टि से तर्कवाक्य :- शाब्दिक तर्कवाक्य और अशाब्दिक तर्कवाक्य अथवा यथार्थ तर्कवाक्य ।